दूसरी योजनाकी तैयारी

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक १५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ११ जून, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

जमीन और आदमियत

"हर भूमिहीनको भूमि मिलनी चाहिये, अिस तरहकी बात हम लोग समझाते हैं और भूदान-यज्ञमें वह हमारी मूलभूत कल्पना है। अुसके विषयमें भिन्न भिन्न प्रकारसे सोचा जाता है। परंतु अुन सब प्रकारोंमें मेरी नजरमें सबसे अधिक महत्त्वकी वस्तु है मूलभूत नैतिक विचार। अिस बारेमें मैंने कभी कभी जिक्र किया है। गया संमेलनमें भी जिक्र किया था। मैं मनुष्यके बुनियादी अधिकारोंमें यह अेक अधिकार मानता हूं कि अुसको, अगर वह भूमिकी सेवा करना चाहता है तो, अुसके हिस्सेमें जितनी जमीन आती है मिलनी चाहिये। जिस देशमें जमीन कम है वहां हर मनुष्यके हिस्सेमें कम जमीन आयेगी। परंतु अुसके हिस्सेमें जितनी जमीन आती होगी अुतनी मांगनेका अुसे हक है। जैसे प्यासेको पानीका हक है और भूखेको खानेका हक है, सबको हवाका हक है, अुसी तरह भूमिकी सेवाका हक भी अेक मानवीय बुनियादी हक है। अिसलिअे मुझे भूदान-यज्ञमें बहुत अधिक अुत्साह मिलता है। अुत्साहके कअी कारण हैं। परंतु मुझे सबसे अधिक प्रेरणा अिस बातसे मिलती है कि यह अेक मनुष्य-जीवनका बुनियादी हक है।"

अिन शब्दोंमें विनोबाने ता० २९-३-'५५ के दिन पुरीमें प्रार्थना-प्रवचन करते हुअे अपना मंतव्य बताया। जमीन पर आदमीका अैसा बुनियादी हक ही नहीं, अिसके प्रति कर्तव्य भी है यह बताते हुअे विनोबाने आगे कहा :

"हरअेक मनुष्यका यह कर्तव्य है कि वह अन्नके अुत्पादनमें हिस्सा ले। जहां समाज-रचना भिन्न प्रकारकी है, वहां यह महसूस नहीं होगा कि भूमिकी सेवा हमारा कर्तव्य है। परंतु आदर्श समाज-रचनामें भूमिकी सेवा हक भी है और कर्तव्य भी है। दुनियामें खेती सर्वोत्तम व्यायाम या शरीर-परिश्रम माना जायगा। वहां स्वच्छ हवा मिलती है, सूर्य-किरणोंका और आकाशका सेवन करनेका मौका मिलता है। सबका समुचित सेवन होता है। सब अंगोंको व्यायाम मिलता है। अुत्पादन होता है। फिर अिसके साथ बोने और फसल पैदा करनेका सारा ब्रह्मकर्म मनुष्य देखता है और अुसमें हिस्सा लेता है।

"खेतीको तो मैं अेक अुपासना मानता हूं। किसीको मंदिरमें आनेसे रोक दिया जाय तो वह जैसे अपराध होगा, अुसी तरह किसीको भूमिकी सेवा करनेसे रोका जाय तो वह भी बहुत बड़ा अपराध होगा। खेती परमेश्वरकी अुपासनाका सर्वोत्तम साधन है। अिसमें अिन्द्रिय-संयमको काफी सहायता मिलती है। अिसलिअे ब्रह्मचर्यकी साधनाके लिअे खेती सहायक होती है। अिस तरह अिसकी ओर अनेक दृष्टियोंसे देखा जा सकता है।"

अिसी विषयकी अपनी आदर्श समाज-दृष्टिसे आगे चर्चा करते हुअे अुन्होंने कहा :

"आदर्श समाज-रचनामें ये बड़े बड़े शहर नहीं रहेंगे। हरअेक घरके पास थोड़ीसी खेती रहेगी, जिसमें घरवाले काम करेंगे। आदर्श समाज-रचनामें हर खेतमें कुआं होगा और हर कोअी भूमिकी सेवा करेगा। मनुष्य-जीवनके जो चतुर्विध कर्तव्य हैं, अुनके पालनके लिअे मनुष्य खेती करेगा। . . .

"आदर्श समाज-रचनामें खेतीके साथ हरअेकको स्वच्छताका भी काम करना होगा। सफाअीको यज्ञ-कार्य समझना चाहिये। किसी अेक वर्गको सफाअीका काम सौंपना गलत है। अुस काममें हरअेकको हिस्सा लेना चाहिये।

"भूदान-यज्ञमें मुझे जो अुत्साह आता है, अुसके अनेक कारणोंमें अेक कारण यह है कि यह मानवोंका धर्म है, सार्ववर्णिक धर्म है। जैसे सत्य भाषण केवल ब्राह्मणोंका ही धर्म नहीं है, सार्ववर्णिक धर्म है। चाहे वेदोंका अध्ययन किसी अेक वर्णका धर्म हो, लेकिन ब्रह्मविद्या प्राप्त करना सार्ववर्णिक धर्म है। अुसी तरह कृषिकर्मकी गिनती सार्ववर्णिक धर्मोंमें होती है। कृषि केवल किसानका ही धर्म नहीं है, सबका धर्म है। कुछ लोग कहते हैं कि सबको जमीन नहीं दे सकते, क्योंकि अुससे जमीनके छोटे छोटे टुकड़े हो जायंगे। परंतु यह सवाल गौण है। मैं यहां कोअी अर्थशास्त्रीय विचार नहीं रख रहा हूं। जमीनकी सेवा करना मनुष्यका बुनियादी हक है। अिस हकको कबूल करनेसे ही मनुष्य सुखी होगा।"

अिस तरह समझनेवाले शख्सको अुपासनाके लिअे जमीन मिल ही जायगी। संत फ्रान्सिस अपने अनुयायियोंसे कहते थे, भिक्षा न मांगो, परंतु आसपासके किसानोंके खेत पर पहुंचकर काम करो और बादमें जो मिल जाय वह खाओ। श्रमकी महिमा मानव-समाजके लिअे अितनी बड़ी है। सचमुच मानव-श्रम सत्य और अहिंसामय हो, तो वही प्रभुकी सच्ची सनातन अुपासना है। कबीरजी यही काम अपनी बुनाअीसे कर लेते थे। मनुष्यको अैसे बड़े अूंचे मुकाम पर अपने मामूली काम करते हुअे पहुंचना है। अिसके लिअे अुसके पास अुत्पादक, सर्वभूतहितकारी, सर्वोदयसाधक काम होना चाहिये। यह अुसका हक है, धर्म है।

परंतु सब अैसे समझनेवाले नहीं हैं। कम-ज्यादा मात्रामें षड्-रिपु हमें सता रहे हैं। संसारका सारा पचड़ा अुसीसे है। अिसको अितजामसे संभालना पड़ता है।

किसानी अेक पेशा है और अिसलिअे सामाजिक मनुष्य अेक जगह पर अपना वतन समझकर बहुधा रहता है। दूसरी जगह जमीन होगी तो भी वह अपने समाजको छोड़कर नहीं जायेगा। जमीनमें किसान अिस तरहसे मानो अपनेको बो देता है। और दुनियाके हिसाबसे देखो तो अेक राष्ट्रके लोग दूसरे राष्ट्रके लोगोंको अपने यहां नहीं आने देते। वैसे जमीन दुनियाके लोगोंके लिअे काफी है। परन्तु मनुष्यने अपना समाज आज अैसा बना रखा है

www.vinoba.in

कि भारतमें जमीन कम है, आस्ट्रेलिया आदि देशोंमें बहुत है। परंतु वहां लोग जा नहीं सकते। और सब कोओी जाना चाहेंगे भी नहीं। आदमीका सवाल अिस तरह पेचीदा है, जिसका हल आदमियतसे करना है, हैवानियतसे नहीं।

१९-५-'५५ मगनभाई देसाई

अुड़ीसामें विनोबा — ६

"गांवमें कोओी भूमि-हीन न रहे, यह है आरम्भका कार्य। और गांवमें कोओी भूमि-मालिक न रहे, यह है अन्तिम कार्य। भूमिका मालिक परमेश्वर है। हम तो सब भूमिपुत्र हैं।"

वालीपदामें पहाड़ोंकी गोदमें, पेड़ोंकी छायामें दूर-दूरसे आये हुअे अरण्यवासी अेकाग्र चित्तसे श्री विनोबाका यह भाषण सुन रहे थे — "अुड़ीसाकी १।। करोड़की आबादीमें से ९० लाख आपके जैसे हैं, जो कि पिछड़ी हुअी जमातोंके माने जाते हैं। आपको धन, विद्या, प्रतिष्ठा आदि कुछ भी हासिल नहीं है। परन्तु अगर आप सम्पूर्ण ग्रामदान देकर, गांवका अेक परिवार बनाकर रहेंगे तो सबसे आगे बढ़ेंगे। देश-विदेशसे आपको देखनेके लिअे लोग आयेंगे, यों सोचकर कि कैसे होते हैं वे लोग, जो बिना किसी प्रकारकी जबरदस्तीके प्रेमसे समझ-बूझकर अपनी सारी जमीन दान देते हैं और मिल-जुलकर रहते हैं, जरा देखें तो! कोओी पूछेगा कि क्या बिना दबावके लोग कभी यह बात मानेंगे? लेकिन भाओी, क्या बीमारको जबरदस्तीसे दवा खिलानी पड़ती है? वह तो खुद होकर कड़वी दवा मांग लेता है और खाता है। अुसी तरह गांव-गांवके लोग जब समझेंगे कि अिसीमें हमारा भला है, तो वे अुठ-अुठकर गांवकी जमीन सब दानमें दे देंगे।"

गोकर्णपुरकी सभामें विनोबाजीने गांववालोंको स्वराज्यके लक्षण बताते हुअे कहा, "विन्ध्यप्रदेशमें अेक देहातमें मैंने लोगोंसे पूछा, क्या आप जानते हैं कि स्वराज्य आया है? तो जवाब मिला कि वे नहीं जानते। अिसके मानी हैं कि गांव-गांवके लोगोंको अभी तक स्वराज्य महसूस ही नहीं हो रहा है। क्या सूर्योदय हुआ यह बात किसीको जतानी पड़ती है? लेकिन गांव-गांवमें स्वराज्य तो तब आयेगा, जब गांववाले निश्चय करेंगे कि हम अपनी सारी जमीन गांवकी बना देंगे, अपना कपड़ा खुद बना लेंगे, अपनी तालीमका अिन्तजाम करेंगे, गांवको स्वच्छ-सुन्दर बनायेंगे, गांवके झगड़ोंका गांवमें ही फैसला करेंगे, जाति-भेद, छुआछूत आदि सब प्रकारके भेदोंको नष्ट करेंगे, व्यसनोंसे मुक्त हो जायेंगे, प्रतिदिन शामको गीता पढ़ेंगे, मधुर वाणी बोलेंगे और निर्भय बनेंगे। जैसे अपना खाना दूसरा नहीं खा सकता है, अुसी तरह हमारा स्वराज्य दूसरा कोओी हमें नहीं दे सकता है। अपना अुद्धार खुदको करना पड़ता है।"

"यह सब कब होगा और कैसे होगा?" दूसरे दिन सुबह चलते समय अेक कार्यकर्ताने सवाल पूछा। विनोबाजीने जवाब दिया, "अिधरसे हमारा काम चल रहा है और अुधरसे वह अेटम और हाअिड्रोजनकी प्रक्रिया चल रही है। दोनों मिलकर अेक ही काम बननेवाला है। विज्ञान कह रहा है कि हिंसाको छोड़ना होगा, गांवका अेक परिवार बनाना होगा तभी हम टिकेंगे। अिसीलिअे तो मैं कहता हूं कि वह अेटमवाली प्रक्रिया जोरोंसे चलने दीजिये। अुससे हमें मदद ही होनेवाली है।"

भूदानके कामको अधिक गति कैसे प्राप्त हो, अिस बारेमें विनोबाजीका चिन्तन तो हमेशा चलता ही रहता है। कभी-कभी वे प्रकट चिन्तन भी करते हैं। अेक दिन अिस विषय पर प्रकट चिन्तन करते हुअे अुन्होंने कहा:

"जब मैं अिस बारेमें सोचता हूं तो मुझे लगता है कि सतत विचार-प्रचार करते हुअे घूमनेवाले परिव्राजकवर्गकी बहुत आवश्यकता है। अिन दिनों राजसत्ताके जरिये काम करानेकी बात चलती है। परन्तु बुद्ध भगवान्‌के हाथमें तो राजसत्ता थी। अुन्होंने अुसे क्यों छोड़ा? बहुतसे लोग मानते हैं कि अशोकके कारण बौद्धधर्म फैला। लेकिन अुससे तो बौद्धधर्मके प्रचारका सिर्फ आभास हुआ और आखिर हिन्दुस्तानसे बौद्धधर्म अुखड़ गया। जहां राजसत्ताकी बात आती है, वहां राजाओंके बीच झगड़े चलते हैं। बौद्ध राजाओंने बौद्धधर्मको बढ़ावा दिया, तो शैव राजाओंने हिन्दू धर्मको बढ़ावा दिया। अिस तरहसे जब राजसत्ताके जरिये काम होता है तो प्रचारके बदले धर्मका क्षय ही होता है। राजसत्ताके जरिये लोगोंकी सेवा हो सकती है, परन्तु लोगोंको अूपर अुठानेका काम राजसत्ता नहीं कर सकती। जैसे मां-बाप बच्चोंका लालन-पालन करते हैं, परन्तु अुनकी बुद्धिमें परिवर्तन करके अुन्हें आगे ले जानेका काम गुरु ही कर सकता है। सतत घूमनेवाले, ज्ञान-प्रचार करनेवाले कार्यकर्ता हों तो सारे देशमें अैसा वातावरण पैदा होगा कि सारा भूमिदान अेक दिनमें खतम हो जायेगा। जैसे सूरज अुग गया तो हरअेक देहातमें अुग गया, वैसे ही अेक तारीख मुकर्रर करके अुस दिन हरअेक गांवमें जमीनका बंटवारा हो सकता है। परन्तु अुसके लिअे निरन्तर ज्ञान-प्रचार करनेवाले परिव्राजक चाहिये।"

दिगपहंडीमें अेक कार्यकर्ताने सवाल पूछा, "सरकारका स्वरूप क्या होना चाहिये?"

अुस दिन प्रार्थना-प्रवचनमें अिस विषय पर विस्तृत विवेचन करते हुअे विनोबाजीने कहा, "सरकारका स्वरूप तो लोगोंकी हालत पर निर्भर है। जिस कुटुम्बमें छोटे बच्चे और जवान माता-पिता होते हैं, अुसका स्वरूप अेक प्रकारका होगा। अुसमें बच्चे माता-पिताकी आज्ञा मानेंगे। जिस कुटुम्बमें समझदार लड़के और प्रौढ़ माता-पिता होते हैं, अुस कुटुम्बका स्वरूप दूसरे प्रकारका होगा। वहां पर दोनोंके सहयोगसे काम चलेगा। और जिस कुटुम्बमें बड़े लड़के और बूढ़े माता-पिता होते हैं, अुसका स्वरूप दूसरा ही रहेगा। वहां पर लड़के ही सारा कारोबार चलायेंगे और मां-बाप सिर्फ सलाह देंगे। परन्तु कुटुम्बका मूल तत्त्व तो प्रेम ही रहेगा। अुसी तरह सरकारका बाह्य स्वरूप तो बदलता रहेगा, परन्तु समाजका मूल तत्त्व होगा सर्वोदय। जैसे-जैसे जनता जागृत होती जायगी, वैसे-वैसे सरकारकी आवश्यकता कम होती जायगी।

"समाजवादी रचना, प्रजातंत्र आदि सारी सुशासनकी बातें हैं। अिसलिअे वे तो शासन-मुक्तिके पेटमें हैं। जैसे मांके पेटमें गर्भ रहता है तो अुसे मांसे पोषण मिलता है, वैसे ही अिनको सर्वोदयसे पोषण मिलेगा। हमारा अन्तिम आदर्श है शासन-मुक्ति। शासन-हीनता दूसरी चीज है, जिसके माने हैं अंधाधुंध कारोबार। अुसे खतम करके सुशासन लाना है और सुशासनसे शासन-मुक्तिकी तरफ जाना है। शासन-मुक्त समाजमें सारा शासन गांव-गांवमें बंटा हुआ रहेगा और कुछ नैतिक तत्त्व समाजके आचरणमें आये होंगे। वह समाज अपरिग्रहके आधार पर खड़ा होगा। अिसलिअे अेक तरफसे शासन-मुक्तिकी ओर ध्यान देते हुअे सुशासन चलाना चाहिये और दूसरी तरफसे शासन-मुक्तिके लिअे जनशक्तिको संगठित करनेका प्रयत्न करना चाहिये।"

१५-५-'५५ कु० दे०

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

भूक्रान्तिके तीन बल

[ता० १३-४-'५५ को ताराबोअी पड़ाव, अुड़ीसा, पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

हमारे साथ तीन बल हैं, जिनके आधार पर हम हिम्मतके साथ गरीबोंसे कहते हैं कि आपको जमीन मिलनी चाहिये और जरूर मिलेगी।

सत्य

पहला बल जो हमारे पास है वह है सत्यका बल। यह बात सत्य है कि जमीनकी मालकियत नहीं हो सकती है। जमीन सबके लिअे है। अिस वास्ते जो भूमिहीन मजदूर काश्त करना चाहते हैं अुन्हें जमीन मिलनी ही चाहिये। अिस सत्यके आधार पर हम गरीबोंको आश्वासन देते हैं। और यह केवल मानवीय सत्य नहीं है, यह अीश्वरीय सत्य है और अिसलिअे हरअेकको वह कबूल ही करना पड़ता है। अभी तक अिस सत्यका अिनकार करनेवाला मनुष्य हमें नहीं मिला। अिन चार सालोंमें, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या अीसाअी और दूसरे भी जितने धर्म हैं, अुन सब धर्मोंके लोग कबूल करते हैं कि यह परमेश्वरकी सृष्टि है और हम सब परमेश्वरके पुत्र हैं। हमारा समान अधिकार है। अीश्वरके घरमें हमारे अधिकारमें कम-बेसी नहीं हो सकता है। अीश्वरके पुत्रके नाते अीश्वरने हमारे लिअे जो संपत्ति छोड़ी है, अुस पर हम सबका अधिकार है। अिस बातको हमें मानना चाहिये और अिस अधिकारसे हम किसीको वंचित नहीं कर सकते हैं। यह अीश्वरीय सत्य है।

तप

दूसरा बल हमारे पास है भूमिहीन किसानोंका। जो खेतोंमें काश्त करते हैं परंतु जिनके लिअे कोअी खेत नहीं है, अुनकी तपस्या पर ही हमारा भरोसा है। ये लोग रात-दिन खेतोंमें खटते हैं, बहुत मेहनत करते हैं। अुस मेहनतका फल अुन्हें पूरी तरहसे नहीं मिलता है। यह सब अुनकी तपस्या है। और तपस्या कभी निष्फल नहीं जाती। अुसका फल अुनको अवश्य मिलना ही चाहिये। अुनकी तपस्या प्रतिदिन जारी है और आप देखेंगे कि अब सारा देश समझ लेगा कि जिन मजदूरोंके आधार पर देश खड़ा है और जिनकी मेहनतसे दौलत पैदा होती है, अुन मजदूरोंको अुनके श्रमका फल नहीं मिलेगा तो अुनके शरीर जीर्णशीर्ण हो जायेंगे और सारा देश गिर जायेगा। ये लोग अुन खेतोंमें काम करते हैं जिनके दूसरे कोअी मालिक कहलाते हैं, जो खुद खेतोंमें काम नहीं करते। तो जैसे बैल काम करते हैं, वैसे ये भी करते हैं। परंतु आप लोग जानते हैं कि वह पुरानी राज्यसत्ता टूट गयी है और अब लोकसत्ता आयी है। अिस लोकसत्तामें हरअेकको वोटका अधिकार मिला है। बैलोंको वोटका अधिकार नहीं मिला है, न अुनमें वह अधिकार हासिल करनेकी ताकत है। अिसलिअे बैल तो हमेशा हमारी दया पर निर्भर रहेंगे। परंतु अिन सारे मजदूरोंकी, जिनको वोटका अधिकार मिला है, तपस्या जरूर सफल होगी। हम अुन्हें कदापि गुलामीमें नहीं रखेंगे। जो लोग खुद दौलत पैदा करते हैं, अुनको अुसका पूरा हिस्सा नहीं मिलता है और अुनको वोटका पूरा हक मिला है तो अुनकी तपस्या कभी निष्फल नहीं हो सकती। यह हमारा दूसरा बल है, जिसे हम तपोबल कहते हैं।

प्रेम

हमारा तीसरा बल है प्रेम। हिन्दुस्तानके सारे लोग निरंतर प्रेमभावमें पले हैं और प्रेमकी बात समझ सकते हैं। आपने देखा है कि जब अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये, तब हिन्दुस्तानमें सैकड़ों राजा-महाराजा थे। वे अगर चाहते तो यहां पर काफी गड़बड़ मचाते। हां, आखिर अुनकी चलती नहीं और वे मार खाते। परंतु चंद दिनों तक तो वे तकलीफ देते ही। लेकिन अुन्होंने अैसा नहीं किया। वे समझ गये और अुन्होंने अपना राज छोड़ दिया। यह भारतीय संस्कृतिका हिस्सा है। तो जिनके हाथमें आज दौलत है, जमीन है, वे लोग प्रेमकी मांगको जरूर समझेंगे और पहचानेंगे अैसा हमारा विश्वास है। अुसी विश्वास पर हमने भूदान-यज्ञ आरंभ किया। अुसी विश्वास पर पहले दिन १८ अप्रैलको हमने जमीनकी मांग की और अेक अुदार महापुरुषने हमें जमीन दी भी। हमारा विश्वास है कि हिन्दुस्तानके वे लोग, जिनके हाथमें दौलत है और जमीन है, भले आज प्रवाहमें बह गये हैं, प्रवाहके परिणामस्वरूप अुनसे कअी तरहकी बुराअियां हुअी हैं, कअी प्रकारके जुल्म हुअे हैं, परंतु अंदरसे अुनका हृदय बिगड़ा हुआ नहीं है। अंदर प्रेम है, अुदारता है। अिस हृदयके प्रेम पर और अुदारता पर हमारा विश्वास है। भारतमें दानकी परंपरा सतत चली आयी है और हिन्दुस्तानमें सब लोगोंने प्राचीन कालसे दान देनेका धर्म माना है। यहां तक कि राज चलानेवालोंने अपने सारे राजका दान दिया और वे चले गये। अैसी कअी कहानियां हिन्दुस्तानमें पड़ी हैं। यह हमारा तीसरा बल है।

अिस तरह हमारे तीन बल हैं, अीश्वरीय सत्यका बल, गरीबोंकी तपस्याका बल और भूमिवानोंके और श्रीमानोंके हृदयके प्रेम और अुदारताका बल। अिन तीनों बलोंका आधार लेकर हम यह काम कर रहे हैं और ये तीनों मिलकर बड़ी ताकत पैदा करनेवाले हैं। अिस तरह जिस देशमें तीन महान ताकतें प्रकट हो रही हैं, अुस देशमें यह मसला बहुत दिनों तक अैसा ही नहीं रहनेवाला है, जल्द हल होनेवाला है।

साम्ययोगकी साधना

अिस तरह अिस देशमें यह अेक चमत्कार हो रहा है। अब कार्यकर्ता जरा जाग जायेंगे तो देखेंगे कि गांव-गांवमें समस्या हल होगी और गांवके लोग अिकट्ठा होकर गांवका मसला अच्छी तरहसे हल करेंगे। आप सब लोग अगर भूमिहीन हैं, तो अपने मनमें सोचियेगा कि हमारा कर्तव्य क्या है और भूमिवान हैं तो भी सोचियेगा कि हमारा कर्तव्य क्या है। दोनों अपने कर्तव्यके बारेमें सोचें और दोनों मिलकर मसला हल करें। भूमिहीनोंका कर्तव्य है कि वे आलस्य छोड़ें। अुनको जो जमीनें मिलेंगी अुन पर तत्परतासे काम करनेके लिअे तैयार हो जायं। वे सब प्रकारके व्यसन छोड़ें, झूठ छोड़ें। और भूमिवानोंका कर्तव्य है कि अपने गांवके भूमिहीनोंको, जो कि खेतमें काम करते हैं, अुनका अुचित हिस्सा यानी छठा हिस्सा दें और साथ-साथ मददमें बैल, बीज आदि सब चीजें दें। जैसे बाप लड़केको अपने पांव पर खड़ा करता है, अुसी तरह अुन भूमिहीनोंको अपने पांव पर खड़ा करें। भूमिवानोंका यह भी कर्तव्य है कि भूमिहीनोंको जमीन देनेके बाद वे अपने पास जो जमीन रखें अुसकी काश्त करनेके लिअे खुद तैयार हो जायं। अगर अुनमें हिम्मत नहीं है, अुनकी अुम्र हो गयी है, तो वे अपने लड़कोंको अुस कामके लिअे तैयार करें। भूमिहीन लोग अुनके खेतों पर दो चार सालके लिअे काम करने आयेंगे। परंतु आगे अुनको अपने लड़कोंको काश्त करनेके लिअे तैयार करना ही होगा। परिस्थिति बदल रही है। अुसके वास्ते अुन्हें अपने मनको और शरीरको तैयार करना होगा। यह बुद्धिमानोंका काम है कि अपनेको परिस्थितिके अनुसार तैयार करें।

अिस तरह हमें भूमिवान और भूमिहीनका भेद ही मिटाना है। सब केवल भूमिपुत्रके नाते भूमिकी सेवा करेंगे। गांवकी जमीन गांवकी होगी और सब मिलकर काश्त करेंगे। यही बात दौलत और कारखानोंको भी लागू करनी होगी। कारखानेवालोंको भी अिस बातके लिअे तैयार होना होगा कि अुनके और अुनके

www.vinoba.in

मजदूरोंके बीच साझा होगा, और दोनों मिलकर काम करेंगे। कारखानोंमें जो काम होगा वह समाजके हितकी दृष्टिसे होगा और अुसमें जो लाभ होगा वह समाजको मिलेगा। अिस तरह हमें भूमिका और संपत्तिका बंटवारा करना है और सारे समाजको मजबूत और अेकरस बनाना है।

विनोबा

हरिजनसेवक

११ जून १९५५

दूसरी योजनाकी तैयारी

आजकल दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी रूपरेखा पर विचार हो रहा है। अैसा मान लिया गया मालूम होता है कि यह काम केवल आंकड़ा-शास्त्रियों और अर्थशास्त्रियोंके ही करनेका है। योजना या प्लानके नामसे भारतमें पिछले कुछ वर्षोंसे जो काम चल रहा है, अुसमें यह दोष आरम्भसे ही रहा है। बेशक, कोअी काम करना हो तो अुसके खर्चका और अुसके लिअे आवश्यक पैसेके प्रबन्धका विचार भी करना पड़ता है। लेकिन योजनाका मर्म तो अिस बातका विचार करनेमें है कि क्या काम करना अुचित है, अुसे किस हेतुसे करना है, अुसके द्वारा हम कौनसा अुद्देश्य सिद्ध करना चाहते हैं, जो काम करने होंगे अुनमें किसका कितना महत्त्व है, पहले क्या करना होगा, बादमें क्या करना होगा, आदि। और ये प्रश्न आंकड़ा-शास्त्र या अर्थशास्त्रके नहीं हैं। ये तो भारतके नवनिर्माणके और दीर्घदृष्टिसे देखी जानेवाली अुसकी भावी रचनाके सवाल हैं।

अिस दृष्टिसे कहें तो अिस बारकी योजनामें नीतिके तौर पर, जिसे समाजवादी ढंगकी व्यवस्थाका नाम दिया गया है, अुसका अनुसरण करनेकी बात सोची गअी है। लेकिन अिसका प्रत्यक्ष अर्थ क्या होगा, यह अभी समझमें नहीं आता। अुसका अर्थ तो प्रधानमंत्री जो करें सो सही।

अभी तक आयोजनके सम्बन्धमें जो बात समझमें आअी है, वह यह है कि योजनामें लगभग ६३ अरब रुपये खर्च होंगे। अिसमें से अनुमानतः २० अरब रुपये 'खानगी क्षेत्र' में खर्च होंगे और बाकी ४३ अरब 'सार्वजनिक क्षेत्र' में।

अिस हिसाबसे पिछली पंचवर्षीय योजना स्पष्ट ही बहुत छोटी चीज थी। अिस बारकी योजना अुससे कहीं बड़ी होगी, अैसा अभिमान भी अुसके बारेमें किया जा रहा है। और अिसी प्रमाणमें अुसके परिणामोंके बारेमें भी अपने-आप अतिशयोक्ति की जा रही है।

अितनी बड़ी रकम आयेगी कहांसे? अुसका भी गणित शुरू हो गया है। जाहिर है कि पैसा जुटानेके तीन ही रास्ते हैं:

(१) करोंसे होनेवाली आय, राष्ट्रीय लोन या बचत;
(२) नये नोट छापना;
(३) परदेशी मदद।

अर्थमंत्रीने अभी सार्वजनिक तौर पर घोषित किया है कि प्रति वर्ष अेक अरबकी आय करोंके जरिये बढ़ाते जाना पड़ेगा। अुन्हें आशा है कि करोंके जरिये अितना रुपया खींचा जा सकेगा। यदि अैसा नहीं हुआ तो योजनाका क्या होगा, यह वक्त आने पर देखा जायगा! अभी तो अच्छी विशाल योजना बना डालना ही मुख्य बात है!

दूसरी बात अुन्होंने यह कही कि १० अरबके नोट छापना होंगे। पैसा जुटानेकी अिस पद्धतिको जो ठीक मानते हैं, अैसे देशी और विदेशी अनेक अर्थशास्त्रियोंके अभिप्राय अिस नीतिके समर्थनमें प्राप्त कर लिये गये हैं। यद्यपि यह भी सही है कि कोअी अर्थशास्त्री अैसा नहीं है, जो पैसा जुटानेकी अिस रीतिको सुरक्षित या सच्ची मानता हो। सब यही कहते हैं कि संभलकर चलना, अन्यथा यदि मुद्रा-प्रसार फूट पड़ा तो मुश्किल होगी और लाभकी जगह नुकसान हो बैठेगा।

यह चीज तो आज भी देखनेमें आती है, क्योंकि नोटोंकी अतिशय छपाअी आज भी चल रही है। अुसका असर यह हुआ है कि खेतीके सिवाय दूसरी चीजोंके दाम नहीं गिरते। यानी मुद्रा-प्रसारका बुरा परिणाम अन्तमें किसानोंको भोगना पड़ता है और सरकार अुन्हें डूबनेसे बचानेके लिअे आज तो कुछ करती नहीं है। अिस तरह हम देखते हैं कि मुद्रा-प्रसारका अनिष्ट प्रभाव, कम या ज्यादा, आज भी है और सामान्यतः वह प्रजाके निर्बल और बहुसंख्यक भाग पर पड़ रहा है। भारतमें आज यह चल रहा है और नोटोंकी अतिशय छपाअी किसानोंका नुकसान कर रही है। आगे भी यही होगा, क्योंकि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाके सिर्फ दो भाग — सरकारी अुद्योग और खानगी अुद्योग — हैं, अैसा समझकर चलनेकी भूल हो रही है। खेती और ग्रामोद्योगोंका अेक तीसरा क्षेत्र भी है और वही सच्चा राष्ट्रीय या आम प्रजासे सम्बन्ध रखनेवाला क्षेत्र है, अिस बातका किसीको पूरा खयाल ही नहीं आता!

मददका तीसरा साधन है परदेश — खासकर अमेरिका। अुस तरह मिलनेवाली मददकी रकम बहुत बड़ी नहीं है। ठीक पता नहीं है, लेकिन याद आता है कि वह योजनाके कुल अंदाजका मुश्किलसे ५–१० प्रतिशत होगी। परन्तु अुसके साथ भारी बला लगी हुअी है। अुसके जरिये अमेरिका हमारे अर्थतंत्र और हमारी विकास-नीतिको प्रभावित करता है, अपने आर्थिक और व्यापारिक हाथ-पांव फैलाता है और अिसलिअे अिनके परिणाम-स्वरूप अुसका राजकीय असर भी पड़े बिना नहीं रहेगा।

अिसलिअे प्रजाको सरकारसे कहना चाहिये कि वह नोटोंकी अतिशय छपाअी तथा परदेशी मददका सहारा छोड़ दे। चूंकि प्रजा कुछ कहती नहीं, चुप है, अिसलिअे सरकारकी जवाबदारी दुगनी हो जाती है। वही योजना सचमुच स्वावलंबी और सुरक्षित कही जा सकती है, जो अिन दो साधनोंसे अपना कोअी सम्बन्ध न रखे। अिन दो साधनों पर आधार रखकर चलना देशके लिअे घातक सिद्ध होगा। अिन दोनों साधनोंको केवल अस्थायी ही माना जा सकता है। वे हमारे लिअे त्याज्य होने चाहिये। (अिसमें विदेशी विनिमयका बड़ा सवाल भी अुठता है। लेकिन आश्चर्यकी बात है कि अभी कोअी अर्थशास्त्री अुसका अुल्लेख नहीं करता। पर यह अेक नया सवाल हो जाता है।)

अैसी बड़ी विशाल योजना न बनानेके व्यवस्था-सम्बन्धी तथा अन्य अनेक कारण भी हैं। सरकारी नौकरशाही कअी दृष्टियोंसे अिन कामोंके लिअे तैयार नहीं है। लोगोंकी ज्ञान-विज्ञानकी तालीम भी अितनी कम है कि वे अिसे पचा नहीं सकते। और यदि विचारपूर्वक बारीकीसे देखें तो मालूम होगा कि बुनियादी काम, जिन्हें हमें पहले हाथमें लेना चाहिये, बाजूमें रह जाते हैं और हम बड़ी-बड़ी बातोंमें पड़ जाते हैं। यह बात अैसी है जो हमें हरगिज नहीं पुसा सकती।

२१–५–'५५ मगनभाअी देसाअी
(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

नौकरशाही बनाम लोकशाही

नअी दिल्लीकी २७ मअीकी अेक खबर अखबारमें अभी पढ़ी। अुसमें कहा गया है कि रेल्वे-मंत्री श्री शास्त्रीजीने अपनी पुत्रीका विवाह मंत्रीपदके गौरव और ठाटबाटके बिना सम्पन्न किया। रेल्वे-विभागके अधिकारी तरह तरहकी मदद कर सकते थे, लेकिन शास्त्रीजीने अैसी मदद लेनेसे अिन्कार कर दिया और अपने सगे-सम्बन्धियोंकी मददसे ही काम पूरा किया — जैसा कि वे मंत्री न होनेकी हालतमें करते। खबरमें यह भी कहा गया है कि बारात अलाहाबादसे आनेवाली थी। अुसके लिअे रेल्वेके लोग विशेष सुविधा करनेवाले थे। लेकिन शास्त्रीजीको अिस बातका पता चला तो अुन्होंने खुद अैसी सुविधा लेनेसे अिन्कार कर दिया। कुछ साज-सामान रेल्वेवाले मुफ्त लानेका अिन्तजाम करना चाहते थे, अुन्हें भी शास्त्रीजीने रोक दिया।

अिस प्रकारकी निरभिमानता और सादगीके लिअे शास्त्रीजी हमारे धन्यवादके पात्र हैं। कहां वह कुंभ मेलेकी 'सम्मान्योंकी आवभगत' की धांधली और कहां यह सादगी!

ब्रिटिश शासनकालमें हमारी नौकरशाहीको अिस विषयमें गलत तालीम मिली हुअी है। अुसमें सुधार हुअे बिना लोकशाहीका विकास नहीं होगा। अेक अुदाहरण, जो रेल्वेके सम्बन्धमें ही अभी हाल देखा, यहां देता हूं:

कुछ दिन पहले मैं दिनकी अेक गाड़ीमें जा रहा था। विवाहोंका मौसम होनेसे गाड़ीमें बड़ी भीड़ थी। वरराजा जैसोंको भी पहले दर्जेमें लोगोंसे सटकर बैठनेकी या मुश्किलसे खड़े रहनेकी जगह मिल पाती थी। यहां तक कि दूर दूरसे रिजर्व टिकटवाले जो लोग आ रहे थे, अुनके लिअे भी रेल्वे-अधिकारियोंने डिब्बों पर रिजर्वेशनका कार्ड नहीं लगाया था। वे लोग भी भीड़में ही शरीक थे, क्योंकि आनेवालेको ना नहीं कहा जा सकता, यह हमारा भारतीय शिष्टाचार है।

अैसे ही समय अेक पूरा खंड अेक बड़े पुलिस अधिकारीको रिजर्वेशनका कार्ड लगाकर दिया गया था। मुझे अैसा बताया गया था कि दिनकी गाड़ीमें सीट रिजर्व नहीं करते। अिसलिअे पुलिस अधिकारीके लिअे पूरा खंड रिजर्व किया देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने रेल्वे अधिकारियोंसे कहा भी। परन्तु अुन्होंने मेरी बात पर कोअी ध्यान नहीं दिया। मुझे लगता है कि अुन्हें मजबूर होकर अैसा करना पड़ा। मेरा विश्वास है कि पुलिसने रेल्वेवालोंसे मिलकर अपने साहबके लिअे जगह सुरक्षित करा ली होगी। टिकटके अलावा रिजर्वेशनके आठ आने भी पुलिस अधिकारीने दिये होंगे या नहीं, यह जांच करनेके लिअे भी कोअी टिकट देखनेवाला कैसे तैयार हो? रिजर्व टिकटवालोंके नाम क्यों नहीं लिखे गये हैं, अिस तरफ भी मैंने रेल्वेवालोंका ध्यान खींचा था।

अिसी तरह अेक दूसरे खंडमें, जिसमें कमसे कम छः आदमी बैठ सकते थे, दो ही फौजी सिपाही बैठे थे। अुनके खंड पर भी रिजर्वेशनका कार्ड लगा हुआ था। अुसमें बैठने जानेवालोंको अुन फौजियोंने नीचे अुतार दिया। कार्ड लगा होनेसे अुन लोगोंको लाचार होकर अुतरना पड़ा। और रेल्वेके लोग फौजियोंसे दूसरोंको जगह देनेकी सभ्यता बतानेकी बात कहनेको तैयार नहीं थे।

पुलिस और फौजके साथ अैसा व्यवहार क्यों होना चाहिये? अब अुन्हें भी कानूनसे बाहर जानेका अधिकार नहीं रहा। अब हमारे देशमें संविधानके अनुसार कानूनके राज्यकी स्थापना हुअी है। अुससे कोअी भी मुक्त नहीं है। परन्तु जनताको अपने व्यवहार और आत्मशुद्धिके द्वारा यह सिद्ध करना होगा। सरकारको भी अिस विषयमें सामान्य जनताकी मदद पर रहना चाहिये। अंग्रेजी हुकूमतकी मनमानी और राजशाहीके संस्कारोंवाली नौकरशाहीको लोकशाहीके ढंग पर सुधारना हमारी सरकारोंके लिअे अेक बड़ा काम है। अिसमें पूंजीकी भी जरूरत नहीं है, और यह सबसे पहले करने जैसा काम है। नअी योजनामें क्या अैसी प्राथमिक बातोंको स्थान दिया जायगा?

१-६-'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

जाति, कौम और राष्ट्र

[ता० २१-५-'५५ के अंकमें छपे 'कौमवाद और जातिवाद' के अनुसंधानमें।]

भारतमें अंग्रेज अीसाअी प्रजा आअी और यहां अुसने अपना राज्य स्थापित किया, अुसके साथ ही भारतके सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विचारों पर भी अुसका प्रभाव पड़ने लगा। अिसका कारण था अंग्रेज प्रजाके नये संस्कार और विचार।

युरोपकी गोरी प्रजाओंमें अेक समय धर्मवार कौमका अभिमान नहीं था, अैसा नहीं कहा जा सकता। अिस्लामके अुदयके बाद अुसका अैश्वर्य बढ़ने लगा, तब ये अीसाअी प्रजायें अेक होकर अुसके खिलाफ लड़ी थीं। अिसके पहले यहूदी प्रजाके खिलाफ भी वे लड़ती रही थीं। परन्तु प्रोटेस्टेन्ट धर्म, विज्ञान और बुद्धिवाद आदि अर्वाचीन बलोंके जागने पर युरोपमें राष्ट्रधर्म और नअी अर्थविद्याका जन्म हुआ। अंग्रेज प्रजा हमारे देशमें आअी, तब अर्वाचीन युगकी अिन सब बातोंको अपने साथ लेकर आअी थी।

अुस समय हमारे यहां धर्मवार कौमभावना और धंधेवार जातिभावना काम करती थी। अंग्रेजोंके राज्यकालमें अिस विषयमें दो प्रकारसे नव प्रयाण आरम्भ हुआ: अेक, अंग्रेज सरकारने दोके बीच तीसरे पक्षकी तरह काम करके अपने शासनको स्थिर बनानेकी नीति विकसित की। जातियोंमें आगे बढ़ी हुअी और पिछड़ी हुअी — अैसे दो भाग कर दिये। और कौमोंमें हिन्दू, मुसलमान वगैरा भाग करके अुसने अपना काम चलाया। भारतके राजकारोबारमें आज तक बनी रही अिन दो दृष्टियोंका आरंभ अिस तरह हुआ था। अुदाहरणके लिअे, आज 'पिछड़ी जातियोंका कमीशन' नियुक्त किया जाता है। पिछड़ेपनमें फायदा मालूम होनेकी वृत्ति भी अिसी तरह पैदा हुअी।

दूसरी ओर अिसका प्रभाव लोगों पर हुआ। नअी प्रजाके सम्पर्कसे हमारे यहां समाज-सुधारक पैदा हुअे, जो जातिसंस्थाको सुधारनेका प्रयत्न करने लगे। और कौमकी दृष्टिसे देखें तो कौमवादी राजनीति शुरू हुअी। कुछ मुसलमानोंने कांग्रेससे अलग होकर अलीगढ़-आन्दोलन शुरू किया और १९०९ में कौमी मताधिकारका जहर यहांकी राजनीतिमें दाखिल कराया। अिससे राजनीतिने अैसी विचित्र दिशा पकड़ी कि आज अजीब-से मालूम होनेवाले 'राष्ट्रवादी मुसलमान' और 'हिन्दू राष्ट्रवादी' जैसे प्रयोग शुरू हो गये। मतलब यह कि राष्ट्रवादी भावनाके बढ़ते हुअे भी अुसमें धर्मवार कौमभावना घुस गअी, जिसमें से आगे चलकर अंग्रेजोंके तीसरे पक्षकी मददके बल पर जिन्ना जैसे चतुर राजनीतिज्ञने धर्मवार द्विराष्ट्रवादका नारा अुठाया और पाकिस्तानकी स्थापना की। गांधीजी जैसे समर्थ नेता भी अिसमें पीछे पड़ गये, क्योंकि हिन्दू जनता सचमुच कौमवादसे बाहर नहीं निकल पाअी थी। वर्ना जैसे हरिजनोंको हिन्दुओंसे अलग करनेमें अंग्रेजों और आम्बेडकरको सफलता नहीं मिली, अुसी तरह यहां अंग्रेजों और जिन्नाको सफलता नहीं मिलती। परन्तु असल चीज प्रेमबल या अेकताकी भावनाका अभाव हो, वहां गांधीजी कैसे जीतते?

कौमभावना और जातिभावनासे परे रहनेवाली अेकराष्ट्र-भावना या प्रजाभावनाके अुदयके लिअे गांधीजीने अेक पीढ़ी तक सतत

www.vinoba.in

प्रयत्न किया। अुसमें से अेक राष्ट्रके बदले दो राष्ट्रोंका अुदय हुआ। अिसमें हमारी प्रजाके कौमी अितिहासका बड़ा जबरदस्त हाथ रहा। परन्तु अिससे अुसका अन्त नहीं होता। भारत अब अुससे आगे बढ़ना चाहता है और अिसके लिअे वह कौम तथा जाति-भावनासे रहित अेक प्रजावादी राष्ट्र बनना चाहता है। अर्थात् हमारे सामने अब यह प्रश्न खड़ा होता है कि हमारी अिन युगों-पुरानी दो भावनाओंका अर्वाचीन युगमें किस तरह निरसन या नवगठन किया जाय?

जो लोग कौम या जातिकी अिन भावनाओंका अन्त करनेकी बातें करते हैं, वे दरअसल अिन भावनाओंका शुद्धीकरण और नवनिर्माण ही चाहते हैं। क्योंकि प्रजायें युगोंसे जिन संस्थाओंके आधार पर जीवन जीती हैं, वे अुनका अभिन्न अंग बन जाती हैं। अैसी संस्थाओंको वे बिलकुल छोड़ नहीं सकतीं; अतः अुनका पुनःसंस्करण ही किया जाना चाहिये। भारतकी युगों-पुरानी विकासयात्रा अब अिस मंजिल पर आ पहुंची है। अिसके मुख्य मुद्दों पर अलग लेखमें विचार किया जायगा।

३-६-'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

अहिंसा ही सच्ची ताकत है

[ता० १८-४-'५५ को राजसुनाखलामें कार्यकर्ताओंके सामने दिये गये भाषणसे।]

भूदान-यज्ञ, ग्रामोद्योग और नयी तालीम ये तीनों मिलकर अेक पूर्ण योजना बनती है। परन्तु भूमिके बंटवारे पर अगर अिनको खड़ा न किया जाय, तो न ग्रामोद्योग टिकेंगे और न नयी तालीम चलेगी। गांधीजीने बीस साल तक ग्रामोद्योग खड़े करनेकी कोशिश की और अब सरकारका भी अिस तरफ कुछ ध्यान गया है। फिर भी ग्रामोद्योग टूटनेका जो आरम्भ हो चुका है, वह अब भी अुसी रास्तेसे आगे बढ़ रहा है। नयी मशीनें आ रही हैं और पुराने धन्धे टूट रहे हैं। अभी हमारे पास राजस्थानसे अेक शिकायत आयी कि वहां अेक मिल खड़ी हुअी है, जो मोटा सूत भी कातती है। तो अुससे मोटा सूत कातनेवाली खादीका धंधा टूट रहा है। मैं मानता हूं कि सरकारको अिस तरफ ध्यान देना चाहिये और ग्रामोद्योगोंको संरक्षण देना चाहिये। ग्रामोद्योगोंके आश्रयके बिना बेरोजगारी नहीं हटेगी। अिसलिअे सरकार अुस ओर ध्यान दे रही है। कोअी भी सरकार नहीं चाहती कि बेरोजगारी कायम रहे। क्योंकि बेरोजगारी मिटती नहीं तो सरकार भी टूटती है और देशकी ताकत भी टूटती है। अिसलिअे सरकार तो अिस ओर ध्यान देगी। परन्तु ये सारे ग्रामोद्योग तब तक नहीं खड़े हो सकेंगे, जब तक भूमिका गलत बंटवारा कायम रहेगा। भूमिके वितरणके बिना ग्रामोद्योगोंको बुनियाद ही नहीं मिलती है। अिसलिअे जमीनका बंटवारा करना होगा। और अुसके साथ-साथ यांत्रिक अुद्योगोंका बहिष्कार भी करना होगा। गांववालोंको अुठ खड़ा होना चाहिये और यह घोषित करना चाहिये कि हम अपनी आवश्यकताकी चीजें गांवमें ही बनायेंगे और बाहरका माल सस्ता होने पर भी नहीं खरीदेंगे।

हमें साम्ययोगी समाज बनाना है। अुसके लिअे भूमिका बंटवारा करना होगा, ग्रामोद्योग खड़े करने होंगे, अुद्योग-अुद्योगमें फर्क नहीं करना होगा, शारीरिक परिश्रम और मानसिक परिश्रमका मूल्य समान मानना होगा और जिम्मेदारीके अनुसार दर्जे नहीं बनाये जायेंगे। आप लोगोंको यह हिम्मत रखनी चाहिये कि हम अिसे अमलमें लायेंगे, चाहे सारी दुनिया अिसके खिलाफ हो। यह अेक सत्य विचार है और हम अिसके लिअे अपना जीवन अर्पण करेंगे। चाहे सारी दुनिया डूब जाय तो भी हमारे गांव अिस विचारको अमलमें लानेसे तर सकते हैं। अहिंसामें यह ताकत है कि चाहे सारी दुनिया डूब रही हो तो भी अकेला मनुष्य खड़ा हो सकता है और बच सकता है। पुराणोंमें कहानी है कि प्रलयके समय सारी दुनिया डूब रही थी, तब मार्कंडेय ऋषि अकेले तैर रहे थे। अहिंसामें यह ताकत है कि अुसके आधारसे मनुष्य खुद बच सकता है और दुनियाको भी बचा सकता है।

अिसलिअे आपको अेक बिलकुल ही नया मिशन मिला है। अिस तरह नूतन धर्म-भावनासे भावित होकर काम करें। हमें अिस पृष्ठभूमि पर काम करना है। कुछ गरीबोंमें थोड़ी जमीन बांटना, अुनको राहत देना अितना ही हमारा काम नहीं है। गरीबोंको न सिर्फ राहत पहुंचेगी बल्कि अुनकी जय होगी। दरिद्रनारायणमें से नारायणकी जय होगी और दरिद्र मिट जायगा। अिस कामके पीछे जो विचार है वह अितना अुत्साहदायी है कि अुससे हमें भी नये-नये शब्द सूझते हैं। यह ज्ञानरवि है। अिसके सामने कोअी अंधकार टिक नहीं सकता। चाहे आज कोअी विचार जोर करे, तो भी आखिरमें हमारी ही जय होनेवाली है, अैसी भावनासे हम बादशाहके जैसे घूमते हैं। जमीन कम मिले तो भी हमें कोअी परवाह नहीं। हम समझते हैं कि ये लोग अभी तक समझे नहीं हैं। समझने पर जमीन देंगे। लेकिन जब तक ये अिस विचारको नहीं मानते हैं, तब तक अुनका अुद्धार नहीं होगा।

हिन्दुस्तानमें जमीन कम है और जनसंख्या विपुल है। यहां पर विज्ञानकी भी ज्यादा प्रगति नहीं हुअी है। अिसलिअे आज हमारे पास जो औजार हैं अुन्हें लेकर ही हम अपने गांवोंको खड़ा करें। फिर नये औजार आने पर हम पुराने फेंक सकते हैं। हिन्दुस्तानकी हालत देखते हुअे अैसा लगता है कि यहां पर हिंसाकी ताकत नहीं बन सकती। और अहिंसा स्थापित किये बगैर हिन्दुस्तानका स्वराज्य नहीं टिक सकता। हिंसाकी ताकत बनानेके लिअे करोड़ों रुपये खर्च करना पड़ता है। हिंदुस्तान वह नहीं कर सकता है। और अगर कर सका तो अुससे दुनियाके लिअे खतरा पैदा होगा। अगर हिन्दुस्तान और चीन जैसे देश अमेरिकाके जैसे शस्त्र बनाने लग जायेंगे, तो आज दुनियाको अमेरिका और रशियासे जितना खतरा है अुससे बहुत ज्यादा खतरा निर्माण होगा। लेकिन परमेश्वरकी कृपासे यह बात बननेवाली नहीं है। अिसलिअे हिन्दुस्तानमें या तो अहिंसाकी ताकत बनेगी या हिन्दुस्तान गुलाम बन जायगा। लेकिन हिन्दुस्तानके लोगोंमें यह श्रद्धा है कि वे जो ताकत अहिंसामें महसूस करते हैं, वह हिंसामें नहीं महसूस करते। हिन्दुस्तानके लोग दुबले, पतले और क्षीणकाय हैं। अैसे कमजोर लोगोंको हम राक्षसी शक्तिमें मजबूत बनायेंगे अैसी आशा नहीं की जा सकती। परन्तु वे आत्मिक शक्तिमें मजबूत बन सकते हैं। और तब तो वे वज्रके समान हो जायेंगे। चाहे दुबले-पतले ही क्यों न हो, अुनके सामने कोअी ताकत नहीं टिकेगी। हां, मैं मानता हूं कि हमारे शरीर भी सुधारने चाहिये, अुनको अुचित पोषण मिलना चाहिये और अुसके लिअे अुपज बढ़ानी चाहिये। हमारे शरीर स्वस्थ, सुन्दर और स्वच्छ होने चाहिये। परन्तु यह असंभव है कि अुड़ीसा जैसा प्रदेश केवल शरीर-बलके आधारसे अग्रसर होगा। लेकिन आत्म-बलके आधार पर वह अग्रसर हो सकता है। अिसलिअे आप लोगोंको यह समझना चाहिये कि हिन्दुस्तानकी ताकत अहिंसाकी ही है। अिस बातको ध्यानमें रखते हुअे योजना कीजिये और आन्दोलन चलाअिये। सतत काम करनेसे हवा बनती है तो फिर अुस हवाका ही असर होता है। अुसकी भी छूत लगती है। बाबाके कामकी हवा अिसलिअे बनती है कि बाबा सतत काम करता है। तो आप भी सतत काम कीजिये और अुसका परिणाम देखिये।

विनोबा

www.vinoba.in

रोगोंको रोकनेवाली दवा

सम्पादक, हरिजन
महोदय,

पिछले हफ्तेके बम्बअीके अखबारोंमें यह खबर छपी थी कि बम्बअी म्युनिसिपल कार्पोरेशनने स्वास्थ्य-अधिकारीके सुझाव पर म्युनिसिपल स्कूलोंके बच्चों और दूसरे बच्चोंको डिप्थेरिया (रोहिणी रोग) का टीका लगानेकी योजना अपना ली है।

लेकिन लन्दनके 'ट्रुथ' नामक अखबारमें — जो सारी दुनियामें मशहूर है — अेक प्रसिद्ध ब्रिटिश डॉक्टर कहते हैं:

"स्वीडनने बिना किसी टीकेके अिलाजके डिप्थेरियाके रोगको लगभग निर्मूल कर दिया है।

जर्मनीमें, जहां डिप्थेरियाके टीकेका पूरा-पूरा अुपयोग किया गया था, रोगियोंकी संख्या १९२८ में ४६,९०५ से बढ़कर १९३८ में १,४९,४९० हो गअी — यानी तिगुनी बढ़ गअी।

पिछले वर्षोंमें अिंगलैण्डमें, जहां पूरी तरह बच्चोंको डिप्थेरियाका टीका लगा दिया गया था, ३०,००० बच्चोंको यह रोग हुआ था।

अिस बातकी कोअी गारंटी नहीं दी जा सकती कि टीका लगाया हुआ बच्चा डिप्थेरियासे नहीं मरेगा या टीकेकी तीव्र प्रतिक्रियासे नहीं मरेगा। . . . हम सत्यकी अवहेलना न करें!"

डॉ० सर डब्ल्यू० अे० लेने, प्रसिद्ध ब्रिटिश सर्जन, कहते हैं:

"शंकास्पद लसियोंसे कृत्रिम रोगमुक्ति पैदा करनेके प्रयत्नके बजाय बच्चोंका स्वास्थ्य सुधारकर स्वाभाविक रोगमुक्ति पैदा करनेका प्रयत्न कहीं ज्यादा सुरक्षित है।"

डॉ० शेफर्ड लिखते हैं:

"डिप्थेरियाका संबंध ज्यादातर सार्वजनिक सफाअीसे रहता है। गंदा पानी ले जानेवाली गटरोंमें सुधार कीजिये, पानी देनेके ढंगमें सुधार कीजिये तो डिप्थेरिया अुपेक्षणीय रोग बन जायगा। आप शरीरके भीतर रोगकी पैदावारोंको अिन्जेक्शन द्वारा भरकर डिप्थेरियासे अपना पिण्ड नहीं छुड़ा सकते; अिससे और ज्यादा बुरे रोग बच्चोंको होंगे। अिसके बजाय स्वास्थ्यके स्वाभाविक नियमोंका पालन कीजिये, सादा जीवन बिताकर, साफ-स्वच्छ पानी पीकर, शुद्ध और बिना मिलावटका भोजन खाकर अपने शरीरको मजबूत बनाअिये और स्वस्थ रहिये। तब आपका शरीर सारे रोगोंके जीवाणुओंका मुकाबला कर सकेगा।"

लन्दन विश्वविद्यालयके डॉ० आर० अेफ० आअुल्ड, अेम० डी०, अेम० अे०, बार-अेट-लॉ, जो बड़े योग्य व्यक्ति हैं, कहते हैं:

"टीकेमें विश्वास आजके डॉक्टरी पेशेके अनेक पागलपनोंमें से अेक है। अुसके पीछे विवेकका कोअी बल नहीं है। अिसलिअे वह बिलकुल विश्वास करने जैसा नहीं है। यह रोगसे अिलाज बदतर होनेकी मिसाल है। जो डॉक्टर डिप्थेरियाका टीका लगाना चाहता है अुससे पूछिये कि क्या वह अिस बातकी गारंटी दे सकता है कि अुससे बच्चेको कोअी नुकसान नहीं होगा, या कि अुससे बच्चा मर नहीं जायगा। वह अिसकी कोअी गारंटी नहीं दे सकता। अेक अैसे रोगके लिअे, जो शायद बच्चेको कभी नहीं होगा, खतरनाक टीका लगाना मूर्खताकी पराकाष्ठा है। विवेकशील माता-पिता मजबूतीसे अुसका विरोध करेंगे।"

भवदीय
सोराबजी मिस्त्री

[हालमें श्री राजाजीने भी बी० सी० जी० के टीकेके खिलाफ अपनी बुद्धिमत्ताकी आवाज अुठाअी है। अुन्होंने बड़ा अच्छा किया है। आधुनिक अेकपंथी डॉक्टरी दिमागने विभिन्न रोगोंको रोकनेवाला जो अिलाज निकाला है, वह खुद ही अेक रोगका रूप ले रहा है। मैं नहीं जानता कि मनुष्यकी भयग्रंथिका ये शंकास्पद दवाअियां शरीरमें भरनेमें कहां तक लाभ अुठाया जाता है। सामान्य लोगोंकी राय तो अिससे बचनेकी और सफाअी व स्वच्छताकी ओर ज्यादा ध्यान देनेकी होनी चाहिये। सरकारको भी शंकास्पद अुपयोगितावाली विदेशी दवाअियां मंगानेमें पैसा खर्च करनेके बजाय सफाअी और स्वच्छताको बढ़ानेमें पैसा खर्च करना चाहिये।

२६-५-'५५ —म० प्र०]
(अंग्रेजीसे)

खादी और ग्रामोद्योगोंकी तालीम

देशमें व्यापक पैमाने पर खादी और ग्रामोद्योगोंका तेजीसे संगठन और विकास करनेके लिअे बड़ी तादादमें तालीम पाये हुअे कार्यकर्ताओंकी जरूरत है। अिससे शिक्षित लोगोंके लिअे, जिनकी ग्रामसेवा और टेकनीकल शिक्षणमें रुचि है, राष्ट्रीय सेवाका नया क्षेत्र खुलता है। संगठन करने और पढ़ानेकी योग्यता रखनेवाले व्यक्तियोंकी आज आवश्यक संख्यामें सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्डके कार्यक्रमका विस्तार होने पर अैसे कुछ हजार लोगोंकी जरूरत पड़नेवाली है।

योग्य व्यक्तियोंकी सेवायें प्राप्त करनेके लिअे पहले-पहल नीचेके लोगोंसे अर्जियां मंगानेका निर्णय किया गया है: (१) अैसे ग्रेज्युअेट जिन्हें समाज-सेवाका दो वर्षका अनुभव है या दो वर्ष तक जिनका अुस सेवासे संबंध रहा है; और (२) अैसे रचनात्मक कार्यकर्ता जो पांच वर्षसे खादी और ग्रामोद्योगोंके काममें लगे हुअे हैं। अुनकी नियुक्ति संगठनकर्ताओं और शिक्षकोंके तौर पर की जायगी, जो देशमें खादी और ग्रामोद्योगोंके विकास और प्रगतिके लिअे काम करेंगे।

जो लोग चुने जायंगे, अुनकी नियुक्ति २०० से ४०० रुपये मासिकके वेतन-क्रममें की जायगी। जो काम अुन्हें सौंपा जायगा अुसे स्वतंत्र रूपसे आरंभ करनेके पहले अुन्हें नासिक स्थित बोर्डकी केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थामें अेक वर्षकी तालीम दी जायगी। जिन्हें अिस काममें रस हो, वे बोर्डके मंत्रीको लिख सकते हैं।

आशा की जाती है कि देशके आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माणके लिअे खादी और ग्रामोद्योगोंके विकासका महत्त्व समझकर सार्वजनिक सेवाकी भावना रखनेवाले शिक्षित और अनुभवी स्त्री-पुरुष बड़ी संख्यामें आगे आयेंगे और स्वतंत्र भारतके निर्माणमें बोर्डकी सहायता करेंगे।

अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड **सी० के० नारायणस्वामी**
महात्मा गांधी रोड,
पो० बॉ० ४८२, बम्बअी – १
(अंग्रेजीसे)

पुरी सर्वोदय संमेलनांक

पुरीमें मार्चके अंतमें जो सर्वोदय-संमेलन हुआ, अुसका पूरा विवरण पहली बार 'सर्वोदय' मासिक पत्रके अप्रैल-मअीके अंकमें प्रकाशित हो रहा है। प्रस्तुत अंक ७ जून तक प्रकाशित हो जायगा। चूंकि यह 'सर्वोदय' मासिकका भी अंतिम अंक है, अतः अिस अंकको चाहनेवाले लोग, जो आज 'सर्वोदय' के ग्राहक नहीं हैं, दो रुपये मनिआॅर्डरसे भेज दें और मनिआॅर्डरके कूपनमें ही अपना पूरा नाम-पता लिख दें।

व्यवस्थापक
सर्वोदय कार्यालय, वर्धा

www.vinoba.in

केन्सर

कुछ ईमानदार चिकित्सकों और आंकड़ा-शास्त्रियोंने साहस-पूर्वक यह मत प्रगट किया कि केन्सर रोगके आंकड़ोंके अध्ययनसे अुन्हें अैसा मालूम होता है कि अन्यथा स्वस्थ पुरुषों और स्त्रियोंमें अकस्मात् केन्सर रोगकी अुत्पत्तिके प्रमुख कारणोंमें अेक कारण सिगरेट पीना भी है।

केन्सर अेक भयानक बीमारी है और जैसा कि स्वाभाविक है लोग अैसी कोअी चीज नहीं करना चाहते जिसमें अिस बीमारीका खतरा हो। अिसलिअे जब अुपर्युक्त मत प्रकाशित हुआ तो सिगरेटकी खपतमें शीघ्र ही भारी कमी आ गयी।

सिगरेट-अुद्योग बहुत ज्यादा संघटित और दुनिया-भरमें फैला हुआ धंधा है। अुसमें भारी पूंजी और लोगोंकी काफी बड़ी संख्या लगी हुअी है। केन्सरके बारेमें वैज्ञानिकोंकी अुपर्युक्त रायका अिस तरह अेकाअेक प्रकाशित हो जाना सिगरेट-अुद्योगके मालिकोंको अच्छा नहीं लगा। लेकिन बात हाथसे बाहर जा चुकी थी और अिस तरह जो समस्या खड़ी हो गयी थी, अुससे निपटनेकी तैयारी करनेमें अुन्हें कुछ वक्त लग गया। पर अुन्होंने बहुत समय नहीं बीतने दिया। शीघ्र ही जो कुछ आवश्यक था अुसकी योजना कर डाली और अब हम देखते हैं कि अेकके बाद अेक कितने ही डॉक्टर अखबारोंमें चिट्ठियों पर चिट्ठियां लिख रहे हैं, जिनका अुद्देश्य सिगरेटके पक्षमें प्रचार करना है। ये डॉक्टर चिकित्सा या स्वास्थ्य-विज्ञानमें अपनी शोधके लिअे ख्यातनामा व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन हम देखते हैं कि सब देशोंके अखबारोंमें अुनकी अिन चिट्ठियोंके लिअे खासा आकर्षक स्थान प्राप्त हो जाता है। बात यह है कि बेचारे दैनिक अखबार विज्ञापनदाता व्यापारियोंके चंगुलमें हैं; वे अिच्छा होते हुअे भी अुनके विरोधमें खड़े नहीं हो सकते।

डॉक्टरीकी डिग्रियोंसे युक्त ये लोग अब यह बता रहे हैं कि:

(१) केन्सर सिगरेट पीनेके सिवा दूसरे कअी कारणोंसे भी हुआ करता है।

(२) यह बात निश्चयात्मक रूपसे प्रमाणित नहीं हुअी है कि सिगरेट पीनेसे केन्सर होता है।

(३) हालमें प्रकाशित हुअे अिस डॉक्टरी अभिप्रायके बावजूद कि सिगरेट केन्सरका अेक प्रधान कारण है कअी खुशमिजाज लोगोंने सिगरेट पीना जारी रखनेका निश्चय किया है। और अैसा निश्चय करनेवालोंमें वे लोग भी हैं जिन्होंने दौड़ आदि खेलोंमें प्रसिद्धि पायी है यानी जो अपने स्वास्थ्यके विषयमें काफी सावधान हैं।

(४) संभव है केन्सरका कारण सिगरेटकी तम्बाकू नहीं, बल्कि अुसका कागज हो और यह कि सिगरेट-अुद्योगके मालिक अिस कारण सिगरेटमें लगाये जानेवाले कागजको निर्दोष बनाने और अुसकी किस्मको अुन्नत करनेमें लगे हुअे हैं।

सिगरेट पीना केन्सरका अेक प्रधान कारण है, अिस डॉक्टरी मतके खिलाफ अब अिस तरहकी बातें कही जा रही हैं। सांपसे खेलना बंद करनेके पहले अिस बातका पक्का प्रमाण मांगा जाय कि सांपका दंश घातक होता है तो यह चीज मनोरंजक अवश्य होगी, लेकिन लोग अैसा करते नहीं हैं। अधिकांश स्त्री-पुरुष तो केन्सरसे बचना चाहते हैं और वे अिस विषयमें किसी तरहका खतरा नहीं अुठाना चाहते। आखिर तो धंधा भी मनुष्यके सुखकी वृद्धिके ही लिअे है। किसी धंधेको कायम रखनेके लिअे लोगोंसे स्वास्थ्यका खतरा अुठानेके लिअे कहा जाय, यह नहीं हो सकता।

च० राजगोपालाचार्य

('अेलर्ट', जनवरी-मार्च, १९५५ से अुद्धृत)

टिप्पणियां

श्री अेन० अेम० जोशी

मजदूरोंके पुराने और अनुभवी नेता श्री अेन० अेम० जोशी ७६ वर्षकी परिपक्व अवस्थामें ३० मअीको अचानक स्वर्गवासी हो गये। वे भारत-सेवक-समिति (सर्वेन्ट्स ऑफ अिन्डिया सोसायटी) के अति पुराने सदस्योंमें से अेक थे, यद्यपि बादके कुछ वर्षोंमें वैधानिक दृष्टिसे वे अुसके सदस्य नहीं रह गये थे। वे जीवन-भर असहायों और पीड़ितोंके पक्षमें लड़ते रहे। सहकारिता, मजदूरोंकी सेवा, नागरिक स्वातंत्र्य, स्थानीय स्वशासन आदि सामाजिक सेवाके जिस किसी भी क्षेत्रमें अुन्होंने काम किया, अुनका हेतु हमेशा गरीबों और अुत्पीड़ितोंकी सहायता करना ही रहा। और यह काम अुन्होंने, अपने महान् गुरु गोखलेके सच्चे शिष्यको जो शोभा दे, अैसे धार्मिक विश्वास और अुत्साहके साथ किया। मेरा खयाल है कि वे अेक सच्चे विचारवादी थे। राष्ट्रकी समस्याओंके प्रति अुनके अिस दृष्टिकोणने ही अुन्हें अपने सारे सहकर्मियोंका प्रिय बना दिया था और यही कारण था कि अपने जीवनके अन्तिम कुछ वर्षोंमें वे अैसे तरुण कार्यकर्ताओंके भी मित्र और पथप्रदर्शक हो सके, जो साम्यवादी अुत्साहसे प्रेरित थे। आनेवाली पीढ़ी अुन्हें मुख्यतया अेक अैसे मजदूर-नेताके रूपमें याद करेगी, जिसने लगभग अेक पीढ़ी तक भारतके मजदूर-आन्दोलनके हितोंका संवर्धन किया।

अुनका सेवामय जीवन नये कार्यकर्ताओंको अुनकी तरह अुज्ज्वल और अर्पित मनोभावसे मातृभूमिकी सेवा करनेकी प्रेरणा दे।

४-६-'५५ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

पंचशील

श्री जवाहरलालजीने आन्तरराष्ट्रीय शांति और युद्ध-निग्रह साधनेके लिअे संसारके राष्ट्रोंके लिअे पांच 'शील' या व्रतोंका विचार करके अुन्हें 'पंचशील' का सुन्दर नाम दिया है।

पंचशीलकी यह बात आज हर जगह सुनाअी देती है। अुसका आन्तरराष्ट्रीय प्रयोग होनेसे अंग्रेजी अखबारोंमें यह शब्द Panch-shila लिखा जाने लगा। देशी भाषाके अखबारोंमें अिस परसे 'पंचशिला' लिखा जाने लगा! और रेडियो पर बोलनेवाला कोअी भाअी अंग्रेजोंकी तरह अुच्चारण करके 'पंचशिला' ही बोला करता है! कहा जाता है कि दिल्लीमें कुछ लोग 'अशोक' के बजाय 'अशोका' बोलते हैं। हमारे लिअे यह चीज शर्मनाक मानी जायगी। अंग्रेजीवाले शब्दके गलत हिज्जे करें और गलत अुच्चारण करें और बादमें वह हमारे लिअे नियमरूप बने, यह कैसी अजीब बात है! हमारे अिस सुन्दर शब्दके अैसे हाल कैसे हो सकते हैं? अंग्रेजीके हिज्जे तुरन्त सुधारकर Panchsheel कर लेने चाहिये।

१४-५-'५५ म० प्र०

(गुजरातीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
जमीन और आदमियत	मगनभाई देसाई	११३
अुड़ीसामें विनोबा — ६	कु० दे०	११४
भूक्रान्तिके तीन बल	विनोबा	११५
दूसरी योजनाकी तैयारी	मगनभाई देसाई	११६
नौकरशाही बनाम लोकशाही	मगनभाई देसाई	११७
जाति, कौम और राष्ट्र	मगनभाई देसाई	११७
अहिंसा ही सच्ची ताकत है	विनोबा	११८
रोगोंको रोकनेवाली दवा	सोराबजी मिस्त्री	११९
खादी और ग्रामोद्योगोंकी तालीम	सी० के० नारायणस्वामी	११९
केन्सर	च० राजगोपालाचार्य	१२०
टिप्पणियां:		
पुरी सर्वोदय सम्मेलनांक		११९
श्री अेन० अेम० जोशी	म० प्र०	१२०
पंचशील	म० प्र०	१२०

www.vinoba.in